गूंगो हुयो गरीब,
बोली थकां अबोल रह
जाडो पड़गी जीभ
रह-रह चुपको, राजिया।

शोषण री चाकी मांय रेत-रेत पीसीजर समाज रो कोई एक वर्ग जणा आपरी भाषा भूल जावै तो काळ रो कवि बीरो पोड़ा नै परोटै। बींनै वाणी री बखसीस देवै। अनै बीरै दुख-दर्द नै आपरै शब्दां मांय ढाळ'र बीरी पुकार नै जनजन ताईं पुगावै।

कवि श्री मंगत बादल आपरै इण नुवादु काव्य संकलन "रेत री पुकार" मांय आपरै गांव-समाज रै इणी रेत-रेत वर्ग नै एक रूपांतरी अभिव्यक्ति दिन्धी है। तुकान्त अनै अतुकान्त रो समन्वय करतो कवि रो शिल्प इण संकलन री एक न्यारी निरवाळी विशेषता है।

मोहन आलोक

रेत री पुकार

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर रै आंशिक आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित

भारत ग्रंथ निकेतन
बी का ने र

-

गुरूदेव
डॉ0 राधेश्यामजी शर्मा
नै

रेत री पुकार

मंगत बादल

आओ चालां

आओ चालां !
अंधारै सूं पार
उजाळै रै दुआर
अलख जगावां !
जिनगाणी री पोथी मांय
भूत, भविस अर वरतमान रै
पाना ऊपर लिखयोड़ा
आखर-आखर अनुभव .
सुपना रै देस बुलावां !
आओ चालां ....
निसासु होय'र बैठ्यां

मंजिल नेड़ै नीं ग्रावै
पगथळियां रै फालां सूं नीपजै
जिको विस्वास
वो इतिहास हुया करै
पीढीयां रो,
कांटां री चुभन स्यूं उपज्योड़ी
रगत री कविता गुणगुणावां ।
ग्राग्रो चालां !
कीं वी मिल सकै
दु:ख, सुख, फूल ग्रर सूळ
पहाड़, दरिया, बाग या वन
पण रोसनी री ग्रास्था एक है
नाम भलाईं कोई हुवै
गीत, गजल या कविता
भावना री टेक है
कदम दर कदम वधावां ।
ग्राग्रो चालां !
ग्राभ रै तारै री
टिमटिमांवती एक किरण
हिरण बण'र भाज ज्यावै
ईं' सूं पे'ला ग्रापां
एक सांस में धारै री मंजिल री
निरख देवां
ग्रास्था री ठिकाणो मांड'र
हद ज्यावां
सूरजी रै घोड़ा री
लगाम थाम'र

ज्योति पुंज रे

जुगाजत गाव

आरतै रो थाळ सजावां !

कदम दर कदम बधावां !

आओ चालां !

अंधारै सूं पार

उजाळै रै दुआर

अलख जगावां ।

सुपनां रो मिरग

मन !
तिसणा रै रेगिस्तान मांय
प्यास बुझावणै री आस
एक बेकार री दौड़ है
समळज्या !
भटक-भटक मर ज्यावैलो !
भावनावां रा ऊबड़–खाबड़
रेतला टिब्बा
सूरज री किरणा साथै मिल'र
एक भ्रम–जाळ वी ताण सकै
पे'तां ओ जाण लेवणो जरूरी है

फेर तो झूठ अर सांच माय
कितणो आतरो है
आदमी पिछाण सकै
एक बूंद पाणी रो मोल तो आंकले
आप'रै हिवडै मांय झांकले
जद आगुनै पग उठाई
थारो डर - अन्तर
करुणा रै जळ सूं भर ज्यावैलो !
मन त्रिसणां रै ···· ···· ····
जिनगाणी बी एक दौड है
मौत री मजिल ताईं पूगणो
एक होड है
सामा रै आरोह अर अवरोह री
सरगम पर
महाकाळ सुर ताळ सूं
मिस्टी रै मिन्दर माथै बैठ्यो
पल, घडी, दिन, रात
बरस दर बरस···· ···· ····
संगीत री साधना मैं व्यस्त है
बीं'रा लाम्बा अर क्रूर हाथ
अभ्यस्त है
जिनगाणी अर मौत रो
फर्क पिछाणणैं ताईं ।
मन !
सुपनां रो मिरग
सुतो ना छोड
थारो रागळो

सुख अर चैन चर ज्यावैलो।
मन त्रिसणां रै.... ....
ईं अणन्त आसमान मांय
पांख पसारणै रो मतलब
खुली उडारी बी हो सकै
अर एक भटकाव बी
पण लक्ष्य-भेदन सूं पे'लां
जरूरी है दिसा रो ग्यान
अंधारै री कूख सूं
निपजेडो एक मून
आंख्यां अर कानां मांय
सर्णाटै री एक लकीर खीच देवै
हिम्मत कर
सिझ्या माथै उग्योडो
एक तारो देख'र
अंधारो डर ज्यावै लो
मन त्रिसणां रै ....

"रेत..................
दूर-दूर ताई सिर्फ रेत
ठूंठ हुया दरख्त
अर सुको घास-फरडो बी दीख ज्यासी
थोडी तावळ करो ?
दिन चढ्यां तो लू लाग ज्यावैली
अर हां !
पे'ला भ्रो हर्यो चस्मो उतारद्यो
जगां इ थारै
मुंडै पर काळ री बात समझ मैं श्रावैली"

आओ चालां

आओ चालां !
अंधारै सूं पार
उजाळै रै दुवार
मशाल जगावां !
जिनगाणी री पोथी मांय
भूत, भविस अर वर्तमान रै
पाना ऊपर लिख्योड़ा
आखर-आखर अनुभव
सपना रै देस बतावां !
आओ चालां ……
[illegible]

मंजिल नेड़ै नी आवै
पगथळियां रै फालां सूं नीपजै
जिको विस्वास
वो इतिहास हुया करै
पीढीयां रो,
कांटां री चुभन स्यूं उपज्योड़ी
रगत री कविता गुणगुणावां ।
आओ चालां !
की वी मिल सकै
दुःख, सुख, फूल घर सूळ
पहाड़, दरिया, बाग या बन
पण रोसनी री आस्था एक है
नाम भलाईं कोई हुवै
गीत, गजल या कविता
भावनां री टेक है
कदम दर कदम बधावां ।
आओ चालां !
आस रै तारै री
टिमटिमावती एक किरण
हिरण बण'र भाज ज्यावै
ईं' सूं पे'लां आपां
एक रात अंधारै री साजिस रो
लिख देवां
आस्था रो ठिकाणो मांड'र
डट ज्यावां
सूरजी रै घोड़ां री
लगाम थाम'र

ज्योति पुंज रै
गुगागत गांय
भारतं रो पाठ गजावां !
कदम दर कदम बधावां !
आपो धाना !
अंधारै सूं पार
उजाळै रै दुआर
अलख जगावां ।

सुपनां रो मिरग

मन !
तिमणा रै रेगिस्तान मांय
प्यास बुझावणै री ग्रास
एक बेकार री दौड है
संभळज्या !
भटक-भटक मर ज्यावैलो !
भावनावां रा ऊबड़-खाबड़
रेतला टिब्बा
सूरज री किरणां साथै मिल'र
एक भ्रम-जाळ वी ताण सकै
पे'तां ग्रो जाण लेवणो जरूरी है

सुख अर चैन चर ज्यावैलो ।
मन त्रिसणां रै.... ....
ईं अणन्त आसमान मांय
पाख पसारणै रो मतलव
खुली उडारी वी हो सकै
अर एक भटकाव वी
पण लक्ष्य-भेदन सूं पे'लां
जरूरी है दिसा रो ग्यान
अंधारै रो वृख सूं
निपजेड़ो एक मून
आंख्या अर कानां मांय
सर्णाटै री एक लकीर खींच देवै
हिम्मत कर
सिड्या माथै उग्योडो
एक तागो देख'र
अधागे डर ज्यावै लो
मन त्रिसणां रै ....

पोट्यां नॉ नॉ

नारी–रतन
सोळा सिणगार कर'र
सिर उपर गागरधर'र
रसिक लोगां नै मो'वती
कामदेव रो हीयो हड़ लेवै
वै पिणघट देख'र
नैणा नै सुख देवा ।
कुदरत रा वै चित्राम निरखां
जठै कै बेकलू रेत रा धोरा
पहाडां सिरखा सुरंगा है
मेघ–मल्हार
चेती या फाग री राग जठै
काळज्यै सूं आर–पार हुज्यावै
चालां—
जठै गुवाळियां री वासरी सुण'र
एकू एक पसू
आंख्यां सूं नेह टपकावै
जठै रा लोग भोळा–भाळा है
वां' सूं चाल'र मिला
पण हां !
एक बात पे'लां सुणल्यो
हो सकै थानै वठै
इण सूं उळूटो मिल ज्यावै
पण थे निरास कोनी होवणो
कै हो सकै
थानै गळियां मांय

नारी–रतन
सोळा सिणगार कर'र
सिर उपर गागरधर'र
रसिक लोगा नै मोंवती
कामदेव रो हीयो हड़ लेवै
वै पिणघट देख'र
नैणा नै सुख देवा।
कुदरत रा वै चित्राम निरखां
जठै कै बैकळू रेत रा धोरा
पहाडा सिरखा सुरंगा है
मेघ–मल्हार
खेती मा फाग री राग जठै
काळज्यै मू आर–पार हुज्यावै
चालो—
जठै गुवाळियाँ री बासरी सुण'र
एक एक पसू
आंख्यां सू नेह टपकै
जठै रा लोग भोळा
वा' सू चाल'र
पण हां !
एक बात पे'
हो सकै
इण सू —
पण थे
बयू
बठै

कवि, कलम अर कविता

तो हिड़दै री उडाई तांई
पूगणै री कांई आस ?
पण थे निरास ना होया।
क्यूं कै हो सकै
थानै अठै आंख्यां में
नेह री जियां
भक भभकती मिलै।
थानै म्हारी वातां मांय
विरोधाभास नागरियो हुवैलो
पण असलियत आ है
कै थे पोथ्यां मांय मंड्योड़ो
गांव कोनी देखणो
क्यूं कै, ई'स्यूं थानै
भरम हो सकै
पण थे निरास ना होया, भलो !

कवि, कलम अर कविता

आज म्हारी कलम
रगत रा आंसू रोवै
आपरै हिवड़ै री पीड़
कागद ऊपर उतारणै ताईं तड़फ
वीं'री एक-एक आखर
गवाह है —
मिनखपणै रै इतिहास री
पण मिनख मानै कोनी
आदमी नै आदमी सूं / ऊंच-नीच रै दरजा मैं
बांटतो रै'ई,
धरती नै

तो हिड़दै री ऊँडाई तांई
पूगणै री कांई आस ?
पण थे निरास ना होया।
क्यूं कै हो सकै
थानै अठै आंख्यां में
नेह री जिग्यां
भक भभकती मिल्नै ।
थानै म्हारी वाता माय
विरोधाभास लागरियो हुवैलो
पण असलियत आ है
कै थे पोथ्यां मांय मड्योड़ो
गांव कोनी देखणो
क्यूंकै, ई'स्यूं थानै
भरम हो सकै
पण थे निरास ना होया, भलो !

कवि, कलम अर कविता

आज म्हारी कलम
रगत रा आंसू रोवै
आपरै हिरदै री पीड
कागद ऊपर उतारणै ताईं तड़फै
बीं'रो एक-एक आखर
गवाह है —
मिनखपणै रै इतिहास रो
पण मिनख मानै कोनी
आदमी नै आदमी सूं / ऊंच-नीच रै दरजा मैं
छाटतो रै'वै,
धरती नै

रगत री लकीर खींच-खींच'र
तेरी मेरी मैं
वांटतो रै'वै।
देस धरम अर जात रै
नाम उपर
भायां रा गला
काटतो रै'वै।
अर कलम रोंवती रै'वै
वीं'रा टप-टप पड़ता आंसू
एक रीतापो भरणै री कोसीस मांय
वीयावान रै हेलै सिरखा
गूंजता रै'वै
अर कवि —
निजु सुआरथा सूं वध्योड़ो
छुट-छुट मरती कलम री
एक-एक सांस रो 'अर्थ शास्त्र'
बैंक रै खाता मांय
उतारता रै'वै।
फेर काई करै कलम ?
अर काई करै कविता ?
अठै तो वंजड़ भावा री
धरती माथै
जरूरत री फसल ऊगमी;
दमी — -
्म सभ्यता सूं चान'र
तक आवो है

गयो बरस

म्हारै हिवड़ै रै कागद पर
लिखतो–लिखतो
एक–एक पल रो इतिहास
एक बरस और रळग्यो
काळ रूपी समन्दर रै
ऊंघै जळ मांय
रेत पर मंडयोड़ी
पगथळयां–सी याद
बाकी रै'गी
म्हारी जिनगाणी री पोथी मांय।
अब हूं वां'रो

आगर-नागर बांचो-बांचनो
एक अंधारै री सुरग सूं
थारै निजरप नाईं
झूठी भोगीम जागी गयूं
चोखा या पोई जग्गी थोथी
कं हूं या नहाई जीन'इ ज्याऊं
पण हाथा-पगां
सर वजूद रै बचाव नाईं
जग्गी है अंधारै सूं भेटो
वगु वै अंधारै रो दूजो नाम है
महाकाळ !
वीं'री भीत ऊपर
अणमिट चित्राम है
जिनगाणी रा
जिवां माय
घड़ी, पल, दिन, रात
बरस दर बरस ....
भर्‌योडा है
चटख रंगा सरीखा
पण वै वी धुंधळाता-धुंधळाता
रै' ज्यासी एक दिन
कोरै रंगां रो घाळमेळ
वा' नै पिछाणणै री कोसीस करी तो
हूं जाणू—
भूत म्हारै सिर ऊपर चढ सकै
फेर इस्यो कुण है

जिको वर्तमान री
कमजोर आंख्यां सूं
म्हारै भविस रो सुपनो पढ़ सकै।
आ बात सोच'र
जरूरी है
एक-एक पल, घड़ी अर
दिन रो हिसाब राखणो
जिको गयो बरस
लिख चुक्यो है
म्हारी जिनगाणी री पोथी माय
क्यूंकै नूंवो बरस
जणा लेखै-जोखै री
जांच-पड़ताल करसी
तो म्हानै
एक-एक पल रो
हिसाब चुकावणो पड़सी।

बेटी नै सासरै में लती बिरियाँ
ग्रा सोच'र
कै दायजै रो दानो
ईं नै जावतो इ ना खा ज्यावै
पाळ-पोस'र
बड़ी ग्रोखी खिनावणी करी है
ग्रागलै घर ताईं
पाछी ना ग्रा ज्यावै !
लिख ! भाई लिख !
कट-बढ'र ना मरै
ग्रापस में भाई-भाई
जात धर्म ग्रर सूबा रै नाम ऊपर
कोई चाल ना खेल ज्यावै दुस्मण
ग्रो हर्‌यो-भर्‌यो बाग उजाड़णै ताईं ।
ख्यात राखी ।
चोकस र'यो ।
लिखदे भाई तारा !
ठोक'र लिखदे !
कै ग्रंगूठो पकड़तै सेठ री पकड़
इतणी तकड़ी ना हुवै
कै बी'री बही
की गरीब री
बेडो ग्रर हथकड़ी ना हुवै
लिखदे भाई !
एक बात ग्रौर लिखदे
कै म्हे थारै मुग्रागत ताईं
त्यार-खड़्या हाँ

पलक-पांवड़ा बिछायां
सिधारो !
रिधी-सिधी ले'र पधारो !
मिनखपणै रो बुझतो दिवलो
फेरूं जगमगा उठै
लिखदे भाई तारा !
एक खत तो लिखदे !
नूंवै बरस रै नाम।

बीज

हूं विज्यो है एक बीज
प्यार
करणां री धरती माय
जिकै रा ढाई ग्राखर
ग्राकास रै विस्तार
ग्रर समन्दर री गैराई सूं
महान् हुवै
कोई भला'ई
कितणो'इ ग्रणजाण हुवै
पण हिड़दै री हिड़दै सूं
वात चीत तांई

बीज

हूं बिज्यो है एक बीज
प्यार
करणां री धरती माय
जिकै रा ढाई आखर
आकास रै विस्तार
अर समन्दर री गैराई सूं
महान् हुवै
कोई भला'ई
कितणो'इ अणजाण हुवै
पण हिडदै री हिडदै सूं
बात चीत तांई

समय—१

मुट्ठी मांय बंद बगळ, रेत ई
समय
भागतो जावै…… ……
भागतो जावै…… ……
अर एक दिन
खाली हथेळ्यां कनै
बाकी रै' वै
कोरो पिछतावो
जिकै सूं उगै
सुपनां री पडती धरती उपर
निस्क्रियता री खरपतवार

फेर आदमी रा
आगै वधता पगल्या
कांटा सूं उळझ'र
रचना कर लेवै
एक इसी दुनियां री
जठै आंसू है, डर है
पीड़ अर चीस है
ईस्यूं छूटकारै खातर
सुतरगुर्गी कोसीस है
अठै आपा कीनैं'इ
दोसी कोनी कै सकां
आ'तो आदमी री
हिम्मत री परख है
कै वो
समय सूं कीयां मुकावलो करै
बीं' सूं डरै
या लड'र मरै
क्यूं कै समय
मुट्ठी वन्द कर्‌या तो
बेकळू रेत है
पण कर्मठ हाथा रै सा'मी
किस्मत रो हर्‌यो-भर्‌यो खेत है।

समय—२

म्हारो नाम है महाकाळ जिकै नै थे
जिकै नै थे
थारी सुविधा मुजब
घड़ी, पल, बरस
अर जुगां तांई बांट राख्यो है
भूत, भविस अर वर्तमान मिसनै
न्यारै-न्यारै नामां सूं छांट राख्यो है
पण काई फर्क पड़ै म्हारै ?
थारै ईं खंड-खंड
देखणै, परखणै अर कैवणै सूं ।
क्यूंकै हूं तो अखंड हूं

आप री गति, क्रिया अर सुभाय सूं
म्हारो विराट सरूप कोनी देख सकै
थारी अै बीमार आंख्यां;
जिवयां माय
मनत्व रो मोतियाबिंद है ।
थारी खड-खंड गच्चाई
चेतना रा चिन्तन
म्हारी अखंड धारा रो वेग है
जिकै री सुरुआत
विचाळो या अन्त कोनी
लगोलग आगै वधतै जावणै री
एक प्रक्रिया रो नाम है समय ।
जिका नै थे —
भूत, भविख अर वर्तमान समझो
वै मेरा इ रूप है
अठै वर्तमान तो
बीजळी रो पळकारो है
भविख री दिसाहीणता सूं निकळ'र
भूत रै कजली वन मैं समाया पिछै
अंधारो इ अंधारो इ है ।
ओ पळकारो
अखण्ड जोत मैं
कीया वदळ यो जा सकै
कोसीस तो आरंवणी चाइजे मानवी री
पण वो तो
म्हानै इ वांटतो जावै

खंड-खंड छांटतो जावै
ई बात सूं अजवाण
कै हू कदे खंडित कोनी हुयो।

चेतावणी

ईं भोळी सिलकत नै
समाजवाद रा सबज बाग दिखा'र
वायदां रो घूंटियो पा'र
काठ री हांडी रै
झांसा गी तळी दे'र
बर-बर राधी है थां
निजु सुग्रारथां री खीचड़ी
ग्रामवासनां रै मर्योड़ै पाडियै रो
मोटियो बणा'र
भासणां रो चाटो
परजातंतर रै वठळियै मैं ठार

घर घर हुई था
आ आंधी भेग
घर रांम वण'र बैठग्या हो।
पण थारी आ पोल
हम्मैं हमेस नईं चालैली
क्यूं कै—
अब ई भेग रै पेट
ठेठ नाभि हेट
एक रीतापो बापरग्यो है।
चेत्या—
आ हम्मैं हालैली
खोलैली अरसा–अरसा
लागलै वरसा सूं मिच्योडी आंख
अर थारी आ वगनै री पांख-सी
धोळी टोपल्यां सूं चिमकैली
सींगा झालैली
ई गांधी री चांदी
लूर री आंधी मैं
मच्योडी हाय ! हाय !
ल्याय ! ल्याय !
आंसू गैस
लाठी चार्ज अर
बंदूका री धाय–धांय रा
खूंटा अबै एक भचीड सूं
फाटैली
ई रै रीतै पेट माय चेत्योड़ी
भूक

पै धाग व्हैगी है
अबकाळै दुहारियो ले'र
पंटोलो तो
लोहलीक है
धोको फाड़ैली !

थार रो न्यूंतो

ठंडी च्यानणी रात मैं
थे कदे देख्यो है थार समन्दर
दूर-दूर तांई धोरां उपर पसर्योड़ी
खेजड़ा अर फोगलां पर अटक्योड़ी
चांदी जेहड़ी च्यानणी
रूपाळी लहरां उठा देवै
थार समन्दर मांय।
किर्रर्र ...... किर्रर्र ...... कर'र
बोलती चोंनरी
रात रै सरणाटै मैं
आवाज री एक लीकी

नकीर सीन देवै,
अर कठै इ भेड्यां विचाळ
बैठ्यो गाडरियो
आप रै अळगोजै स्यूं
काना में मीठो रस सीच देवै।
हुती–हुती हु उ उ उ उ
री लाम्बी राग खीचता गादडा
अर वां'नै पडूतर सो देवता गंडक
किणी पंखेरु रै
पांख्यां री फड़फडाहट
सुणी है ?
देखी है आंख्यां सूं ?
च्यानणी रात उपर उतरती
काळमस री एक पडत अर
गरत हुं तो मौसम ?
रेत रै भवर में।
मौसम —
सिर्फ कस्मीर, कुल्लू, मसूरी
उटी अर स्विटजरलैंड में इ कोनी
अठै वी है
कदे भुकाळ में पधारो
थार समन्दर रो नूंतो है थानै।
देख्या ! फेर ठडी च्यानणी रात में
रेत रो हेत
अर थे कै उठस्यो —
गर फिर दौग वररुग्रे जमीनस्त
हमीनस्त ! हमीनस्त ! हमीनस्त !

याद

हिवड़ै रै समदर मांय
जद बी जुआर–भाटो उठै
थारी याद री कलायण
उमड़–घुमड़'र
म्हारै मन रो आकास
ढक लेवै
अर हूं समझ ज्याऊं
क आज थारी आंख्यां सूं
बरसात हुई हुवैली ।
भावनावां री झील मांय
जठै आपां मिल'र

सुपनां रो एक पत्थर उछाळ्यो
बठै सूं उठ्योड़ी
एक-एक तरंग
अतीत रै किनारै सूं
मुड-मुड़'र चली ज्यावै
अर गीत लिखती म्हारी कलम
मळक'र झुक ज्यावै
थोड़ी रूक ज्यावै
थारै रूप रो छन्द पढ़ती-पढ़ती
अर हूं समझ ज्याऊं
कै आज थे
मंडेरी पर बैठ्यो काग
म्हारो नाम ले'र
उडायो हुवैलो।
अमर वेल ज्यूं पसर्योड़ी
थारी मनुहार
अर थारो प्यार
म्हारी जिनगाणी रै रूंख री
एक-एक साख उपर
सांप री जूड तरियां
लिपट-लिपट
रस खींच'र
यादां रै बिए सूं सींच'र
एक मुकै ठूंठ मांय
वदळ देवै
अर हूं समझ ज्याऊं
कै थे आज वो

म्हारी प्रीत नै
एक गुमविस्मत हादगो
समझ'र
भुलावणै री कोसीस मांय
म्हागी याद दुमराई हुवेली।

म्हारी चेतना

हूँ सोचूँ—
कांईं घुण लागग्यो ?
म्हारी चेतना रै ।
जिकी सुकै खेजड़ै ज्यूँ
ठूंठ होय री है
ग्रो ठहराव, जड़ता
जिकी वधती जावै
कठै जाय'र थमसी ?
ग्रर ग्रसमंजसता रै थार मैं
भटकतो म्हारो मन
म्रिग त्रिसणां रै लारै भाजतो र'वैलो

या मटँड रमगी
आ गत (या दुरगत)
कुणसो पड़ाव है जिनगाणी रो ?
सोचता नै सोच
अर बोलता नै बोल कोनीआवै'
अंधारै सूं जूझता म्हारा पग
जिका नै
कोई रास्तो कोनी थ्यावै ।
वै कांई निमाणु होय'र बैठ ज्यावैला ?
आज कोई उत्तर नी है
म्हारै कनै
पण, म्हानै विस्वास है
म्हारै हाथां पर ।
कै, अै ई जटता पर
जोर सूं चोट करसी,
अर ई ठहराव नै तोडणै ताईं
म्हारै थकयोड़ै पगां मैं
मंजिल ताईं पूगणै री हिम्मत भरसी ।
वै दिन नईं रै' या
तो अै बी कोनी रै'वै ।
म्हानै आस है;
पक्को विस्वास है ।

मरुधरा, मा !

मा ! मरुधरा !
थारो कितो'क रगत
त्रिसा बुझावणै री उडीक मैं
पाणी बणग्यो हुवैलो !
ग्रर थारै धोरांळी
आ चांदी सिरखी रेत
कितो'क ग्राम संजोयां
बैठी हुवैली
कै कोई थानै
नेह रै मेह सूं सींचै
तो थे वां' नै

आप री कूख रा मोती द्यो।
पण म्हे मानवी
कदे थारो दुखड़ो कोनी सुण्यो।
म्हे आपस में
लड़ता–झगड़ता रैया
थारी छाती उपर
खून वे'वतो र'यो
एक बेटै री मौत पर
एक आंख सूं रोवती
अर दूजै बेटै री जीत उपर
बीजी आंख सूं मुळकती र'यी।
मा ! मरुधरा !
थारी जिनगाणी
बरोबर हरख अर सोग रै
बिचाळै वे'वती रै'यी
इतिहास कै'वती रै'यी
थारी आ माटी।
ऐ जनम भोम !
म्हे निजु सुआरथा रै
चोगर्दै माय
भायप रा चमन
मिटावता रै'या,
मिनखपणै नै
रीजै माय जट'र
घुमावंता रै'या।

मरूधरा, मा !

मा ! मरूधरा !
थारो कितो'क रगत
त्रिसा बुझावणै री उडीक में
पाणी वणग्यो हुवैलो !
अर थारै धोरांळी
आ चांदी सिरखी रेत
किती'क ग्राम संजोयां
वैठी हुवैली
जे कोई थानै
नेह रै मेह सूं सींचै
तो थे वां' नै

मायड़ !
थारा अँ आंसू
पतो नी कुण थामसी !
अर कद थामसी !

पिताजी रो खत

खत आयो है घर सूं
हूँ बिना बांच्यां
धर दियो एक कानी
क्यूं कै, जद बी घर सूं खत आवै
पिताजी रो
देख'र इ म्हारो हिवड़ो कांप ज्यावै
हूँ जाणूं
कांईं हुसी खत रो मजमून
म्हारो मन पे'लां इ भांप ज्यावै
थे नईं मानो म्हारी बात
तो लारला सारा खत बांच'र देखल्यो

भासा रै चक्कर नै छोड़द्यो
विषय वस्तु एक इ हुवैली—
"बेटा ! अठै तो ईं साल बी
दुर्भख काळ पड़ग्यो
थे जिको 'मनीग्राडर' घाल्यो
वीं रै पीसां सूं दाणा ले ग्राया
कोनी चुकाइज्यो सेठ रो करजो
के करां ?

ग्रै पेट रा दरड़ा भरै
जणां इ पार पड़ै
सारा गाँवाळा बे'ला बैठ्या
भूक सूं बाथो करै
म्हे जाणां ईंया बी कोनी सरै
पण करै बी का ई ?

थे बताग्रो !
कईं तो कमाई करणै ताईं
बारै बी गया
पण वा' गे ग्रब
की ग्रतो-पतो कोनी
बिच्यारा कठैई भूक सूं लड़ता
धक्का खावता हुसी
कांई समाचार देवै
ग्राप री वदहवाली रो ।
थारी भैण लिछमी ईं फागण मैं
पूरी वीस वरस री हुगी है
ग्रवै हाथ पीला करणा पड़सी

जुग्रान भेण-बेटी तो
ग्राप रै घरां इ पोखी लागै
ग्रो'इ समय रो तकाजो है
के बतावां भाया
ग्रठै तो वै'इ राग
ग्रर वो'इ बाजो है
थारी मा रै तो
की न की चिरण-पिरण
सदां'इ रै'वै
पण ग्रब कै तो
म्हानै'इ ताप दा लियो
ग्रर म्हयो-म्हयो हूँसलो
पटवारी ग्राळै "हाळै मामलै" गालियो
ग्रापणी सोरनी गा तो मरगी
ग्रर वांवळी तूगी
धीणो-धण्पो की कोनी
छा' रो इ तोडो है
ग्रोर हाल थांरै लिख्या ग्रठै ग
फोटो इ फोटो है ।
गांव-गुवाड रो हाल-चाल ची
ग्रापणै सिरखो इ है
लोग ग्रासमान तकता रैवै
'मेह हुसी !' 'मेह हुसी !'
कूड़ा'इ बकता रै'वै ।
टेगो चमार भूख मरतो मरग्यो,
ग्रर बरमू रातो पाळ कोनी सक्यो

मोटो परिवार
मगन मरतो कूवै में पड़ग्यो ।
लालु लम्बरदार री छोरी लाजकी
सिगी साथै भाजगी
ढेलू धाणकै री
ऊँट पर सूं
पड'र टांग टूटगी;
पेमी नाई री आंख
आकड़ै रो दूध पड़णै सूं फूटगी ।"
ओ'इ हाल हरेक खत में
लिख्योड़ो हुवै
हां ! आई बर पाम जरूर बदल ज्यावै
थे' इ बताओ
हूं कांई करूं खत पढ़'र
म्हारै तो
की समझ में कोनी आवै ।

ग्राभो तकती ग्रॉख्यां मँ
मेह सूं कितणो नेह हुवै
ग्रै सेजड़ा ग्रर फोगला जाणै
या जाणै रोहिडो
जिको काळी–पीळी ग्रांधी मैं बी
मुळकतो–मुळकतो गीत गा देवै
रेत री संवेदनसीलता रा
रेत —
कोरी रेत नईं है
ग्रठै बी थानै
रंगीन कल्पनावां मिलसी;
जिकै दिन ग्रा रेत
ग्रंगडाई लेसी
इतिहास बदळ ज्यावैलो
थे देखता रह्ज्यो
ग्रठै बी
नुंईं–नुंईं कळियाँ खिलसी।

जिका ग्राप रै भायलां रो
लो'ई पीवण तांई तण ज्यावै,
ग्रर ग्रादमी, ग्रादमी कोनी रै'वै
ग्रादमखोर वण ज्यावै ।
खतरो पूरो है
वधतै रेगिस्तान रो
ग्रादमी नै,
दुनियां नै ।
ई'रो ग्रणथाग फैलाव
ग्रवै ग्रापांनै रोकणो पड़सी;
ग्राग्रो लगावां
भायप, सद्भावना, ग्रपणायतरी कलम
वै एक दिन रूंख बण'र
ई थार सूं लड़सी ।

एक खूंखार आदमखोर
पैदा करती भूक
नेह, नाता, भायप, अपणायत तोडती
काळी-पीळी आंधी ज्यूं सूं काट मचांवती
ज्वालामुखी सिरखी आग
धरती रै अंतस नैं फोड़ती
लावै सिरखी
होटां सूं झरती भूक।
ईं री एक थिरकण उपर
जिनगाणी री लय-ताल भंग हु ज्यावै
बाकी रै' वै सिर्फ
मौत रै पगां री छाप..............
जद बो काळ डमरू बजावै
डरती धरती रो काळज्यो पाट ज्यावै
कांप उठै रेत
खेजड़ी, फोग अर लाणै सूं
मिल'र पून
'पाणी-पाणी' चिरळावै।
हूं सुण्या है वै हेला —
'पाणी-पाणी' किरलांवती जीयाजंत'रा
टूटती आस
उखड़ती सास
अर डूबती आंख्यां मैं
हूं देख्यो है—
महाकाळ रो तांडव
भूक रै कैलास सिखर पर।

वे कवि

कीयां वां'रो खून पाणी वणग्यो ?
जोर–जुल्म गी वात सुण'र
क्यूं कोनी खड़्या हुवैं
वां' रा रूंगट्या;
क्यूं कोनी वो'डै आज वै
चेतावणी रा चूंगठ्या ।
आज राणा प्रताप नै छोड'र
कवि थे —
क्यूं भरण लागरिया हो
अकवर गी चिलम ?
सोरठ्या जिका —
ज्यान फूंक देंवता मुरदा मैं
कवि !
कठै गयो थागो वो इलग ?
क्यूं छोड दियो कविता
साथै जावणो थे
जुद्ध रै मैदान मे ?
आज क्यूं कोनी टपकै ओज
थारी वाणी सू ?
क्यूं थारी जुवान रै
ताळा लागग्या ?
क्यूं कोनी रै'यो कविता
आज लोगां री जिनगाणी मैं
लोगां रो विस्वास क्यूं मरग्यो ?
कविता साथै
ओ अत्याचार कुण करग्यो ?

म्हारा सुपनां

कांई हुग्यो म्हारै सुपनां रै
आजकाल की डर्‌या-डर्‌या रै'वै
गंडक आगै भाजतै हरिण सिरखा।
वै कोनी चाहवै
वां'नै कोई देखै, निरखै
अर चालता-चालता उछाळ देवै
अणबूझ्या सुआल
जिकै सूं पड़ ज्यावै
वां'रो अस्तित्व खतरै में।
सुपनां देखणा गैर कानूनी है।

स्यान् एक आदमी एक बगत मैं
एक इ काम कर सकै,
वो चाहवै तो खेत मैं हळ चला लेवै
अर वो चाहवै
तो आंख्यां मैं
मोवणा-मोवणा सुपना भर सकै।
पण आ बात कोनी जाणै हो
खड्गसिंग रो सुजारो स्योजी
खेत मैं हळ बा'वतो-बा'वतो
देखलियो सुपनो
अर मांग बैठ्यो हक
तो खड्गसिंग रै भीतरलो
जमीदार ताव खाग्यो
वी टेम तो वो
कीया इ दांत भीच'र टळग्यो
पण वी रात इ स्योजी
होको पीवतो-पीवतो
खेत मैं इ
झूंपडी समेत बळग्यो।
थे समझो —
काई स्योजी रा लुगाई-टाबर
पुलस-कचेडी रै चक्कर मैं पड्ंला ?
अर पड्ंइला
कीं'री आगळ्यां चढ़'र
तो जकीन करो
कठै इ गंदै नाळै मैं पड्या सिड्ंला।

वां'री ल्हास चील-कागला खासी
क्यूं कै दरोगा जी तो
अबै इ वां'रै घरां हांसता-हांसता आवै
अर फेर वी आसी।
कितणा खतरनाक हुया सुपना
कै सुपना देखतो-देखतो स्योजी
आज कीयां
खुद एक सुपनो वणग्यो।
अब थे इ बताओ —
म्हारा अणबोल सुपना
जे ना डरै,
तो विच्यारा कांई करै ?

म्हारो बसंत

थारै आवंतो हुसी बसंत
फागण में।
अठै तो आया साढ़ में
जे आसमान फूट ज्यावै
अर जम ज्यावै बाजरी री जड़,
पसर ज्यावै
काकड़ियै-मतीरियै री बेलां
मूंग-मोठ धरती ढक लेवै
तो सावण-भादुवै स्यूं
सगळी रुत हेठी है।
आ बार है ! बार !!

अठै सगळी रुत अळगी है
दुनियां सूं ।
अठै बचपन सूं सीधो
बुढ़ापो आवै;
जुआनी रो पानो
वेरो नीं कुण पाड़ ज्यावै ?
जिनगाणी एक-एक सास सूं
धक्का पेल करै
रात रै सरणाटै मैं
रेत री गीत गांवती सुण ज्यासी
कुदरत री अठै
रोज–रोज नूंवा खेल करै ।
रेत रै ईं तपतै समन्दर मैं
धोरा री ढाळ पर
हठ जोगी–सा
एक टांग पर उभा खेजड़ा
गै'री साधनां मैं व्यस्त है,
अर बळती दोफारी मैं बोलती कमेड़ी
कीं भगत ज्यूं
रामनामी धुन मैं मस्त है ।
अठै हरेक जीव सांस–सांस में
जिनगाणी सूं जंग करै
वै विश्राम थानै अठै–कठै मिलसी,
जठै फागण
फूल–फूल मैं नूंवां–नूंवां रंग भरै ?

रेगिस्तान में बदळतो आदमी

हूं देख्यो है आदमी नै
रेगिस्तान में बदळता
अजगर ज्यूं मूं'डो फाड़ती भूक
जद अंगड़ाई लै वै
तो सै' सूं पै'ला
वा हर्‌या-भर्‌या सिम्ना लील लेवै
आंख्यां में
उतरियावै एक सूं' नाड़
संवेदना फट देणी मर ज्यावै
ताती रेत में भुळस'र
सूख ज्यावै हेत रो खेत

वै'वतां इ हळको सो वायरो
गिड ज्यावै
आतंक रो फंटाळियो
अठै, वठै, हर कठै
फेर आदमी
चालती-फिरती ल्हास वण ज्यावै;
रोटी या कागत रै टुकड़ै बदळै
थे खरीद सको,
आदमियत या अपणायत यठै कोनी मिलै
गुलामी रो इतिहास वण ज्यावै।
ओ इतिहास चालतो रै'वै
वरस दर वरस
पीढी दर पीढ़ी
पण एक दिन
काळी-पीळी आंधी आवै।
वा ढक लेवै सगळो की,
च्यारूं-मेर दिसै
सिर्फ रेत इ रेत !
हूं देखी है —
वा काळी-पीळी आंधी
अर आदमी नै
रेगिस्तान में वदळतां।

रोसनी अर गाँव

दिन छिपता'इ डूब ज्यावै
म्हारो गाँव
एक गहरै अंधारै अर उदासी रै
दरियाव में।
सुणया करता टाबरपणै में
कै म्हारै गाँव में बी
रोसनी री खेर उतरैली
अर सेंचमण हु ज्यासी आभो
धरती, म्हारो घर।
पण वो सुपनो
हाल पूरो कोनी हुयो

(स्यात अधूरो रैवणो इ
सुपनां री मजबूरी है)
दिन छिपतां इ दबोच लेवै
गाँव नैं
एक आदमखोर मून
अर बी रै पंजां मैं
तड़फड़ावंतो, प्राणां री भिच्छ्या
मागतो रह्वै गाँव ।
बीयां हारी–बीमारी मैं अठै
ओझा है
देवी–देवता अर पित्तर हैं
रामदेवजी, तेजो, गोगो
बाबो हरीराम, गुसाईं जो
कोई न कोई तो
बिठा'इ देवै बात रो घड़,
डांगरा री बीमारी–सिमारी मैं
सै'सूं चोखो इलाज है
अठै पाबूजी री पड़ ।
कदे-कदे तो ईयां लागै
सूरजी रै ग्रै'ण लागग्यो
बी'रो किरणां बी पूरी-मूरी कोनी आवै
फेर बी गाँव विच्यारो
कद सूं बैठ्यो है आस मैं
कै रोसनी री खेप उतरैली
अर सैचन्नण हुज्यासी आभो
धरती, म्हारा घर ।

सबद

सबद भटकग्या थार में।
डरचोड़ा-सा
तावड़-तोड़ भाज्या फिरै।
ढूंढणै ताईं सही दिसा।
पपड़ाइजग्या ब्या'रा होट
कोनी सैं'सक्या
बळती लूआं री चोट
दूर-दूर तक निजर पसार
वै देखै
कै मिल ज्यावै कठैइ वा'नै
संवेदनसीलता रो ठंडो जळ

तो कंठ गिल्ना कर लेवै
अर सास-सांग मैं
ग्रोजु विस्वास भर लेवै।
सवद ग्रव
हार्‌या, थक्या, चुक्योड़ा-सा
दीन-हीन खड्‌या है
ईं काळी-पीळी ग्रांधी रै कारण
सूरज वी लु'कग्यो।
करै कांई सवद ?
चेतो भाई !
सवदां री सार-संभाळ करो
वा'नैं सही मार्ग दिखाग्रो
ग्रारतो कर'र घरां ल्याग्रो
म्रिग त्रिसणा री
कूड़ी दौड़ सूं वचाग्रो।
फेर एक वखत ग्रासी
जद सब्द थानै वचावैला,
ग्रर थारै सुपनारी
रंगीन-दुनियां रचावैला।

छियाँ

छियां !
चठै छियां !
कोनी मिलै इयां
ढूंढणै सूं छियां !
ग्रोथार है —
त्रिसा सूं वाकल ।
पे'ली बात तो ग्रठै
किणी बीज रो
ग्रंखुग्रो'इ कोनी फुटै
ग्रर फुट ज्यावै,
गो काईं भरोसो ईं रेत रो ?
कद चीं'री छोटी-सी कूंपळ नै
दे देवै रेत-समाधी;
ग्राधी ग्रर गुमनामी जिनगाणी जी'र
काळ मौत मर ज्यावै बीज ।
ंनिहास सोध'र देखल्यो
ि ..ग्यतावां खोद'र देखल्यो

जोधा–जुग्रान
लड़ाई रा मैदान
पून–पांखी घोड़ा
तोप तलवार तीर
वार पर वार करता वीर
श्रै सगळा चित्राम थानै मिल ज्यासी
जिका नै देख'र
थारो हियो खिल ज्यासी
मिन्दर, मसीत, गिरजां रा गुम्मद
श्रासमान सूं बातां करती धरम–धुज्जा
मोटा–मोटा संत, महन्त
उपदेसां सूं भर्योड़ा ग्रन्थ
थारै श्रागै श्रावैला
लोग थानै
नूंवा–नूंवा मारग दिखावैला
पण वां पर
छियां कोनी हुवैली
जठै थे
घड़ी दो घड़ी विश्राम कर सको;
सांसां में सुगंध भर सको ।
धरम गुरुश्रां रा श्रळगा–श्रळगा
सोवणा–सोवणा धरम मिलसी,
व्याख्या कर्योड़ा करम मिलसी;
तळतळांवतै तावड़िये में
बळ ज्यासी थारो तन, मन
पगथळ्या रै पड़ ज्यासी फाल ।
पण छियां ?
हां । छियां रै भरोसै थानै

छियाँ रो जन्म मिलसी ।
ईं धार में
कोनी न्हाखण देवै कोई
छियाँ रो मंत्र
जद वो अठै कोई कूंपळ फूटै
काट देवै वीं'रो टूंसो
बाट देवै उन
अर दुनियाँ नै जी भर'र लूटै
छियाँ !
बारूद रै धुएँ री
हाइड्रोजन बम्म, प्रक्षेपास्त्र
जद करनो परचार—नतर
थारो मन, थारो माथो ।
पण छियाँ ?
थानै कठै इ कोनी मिलैली
आ'रे भरोसै
जिका छिया रा ठेकेदार है
नाच पूछो तो भाया
थारी जिनगाणी रो मकसद
छियाँ टूंढणो है
ज्यान वो जा सकै
छिया री खोज में
मावळ चेत रहज्यो
ठगामूं. आंधी—भभोड़ै सूं
भ्रिम त्रिसणां सूं
क्यूं कै ओ थार है
हरदम याद राखज्यो
थानै छियाँ सूं प्यार है !
थानै छियाँ री दरकार है !

सर्वे

सर्वे !
सर्वे करल्यो सा'ब
बीया मन्तरी जी च्यार दिन पे'लां
अठै हैलीकोप्टर सूं सर्वे करग्या;
बी दिन'इ अखबार में खबर आई
थे बी पढ़ी हुवैली
कै तीन आदमी भूक सूं मरग्या।
राहत !
नई सा'ब अठै तो
राहत–वाहत की कोनी आई
लागै थारी राहत बी
म्हारै गाँव रो राह छोड़'र
बादळा री घटावां ज्यूं
और कठीनै टळगी
या राहत कोई बरफ री मिलडी ही
जिकी अठै तक पूगणै री कोसीस मैं
राह मैं इ पिघळगी।

ई इलाकै मैं
च्यार बरस सूं एक छांट कोनी पड़ी
छ: - सात साल रा टाबर तो
जाणै इ कोनी बादळ के हुवै ?
कांई हुवै काळी घटा
अर कांई मेह हुवै ?
अठै पाणी रो नाम इ जिनगाणी है;
अर जिनगाणी रो संघर्ष
पाणी री कहाणी है।
आं दिना अठै एक बीमारी फैली है,
मिनखा अर डागरा रै पेट मैं
भूख सूं बायटो उठै
अर वै पटापट मर ज्यावै;
पण लारै
चील-कागला नै तो मोज कर ज्यावै।
दूर-दूर ताईं चाळ रेत उड़ै
आभै कानी तकयां
आँख्यां में पाणी आ ज्यावै,
इस्या मिनख मार काळ देख्या है
इण धरती
रो भूखो मरतो आदमी
आदमी नै खा ज्यावै ।
अठै भावनावां री जड़
भूख री कुल्हाड़ी वाढ़ देवै,
अर रिस्तै-नाता री बाळज्यो
अभावां री डायण काढ़ लेवै ।